(ख) अथ हल्सन्धिः

स्तोः श्चुना श्चुः 8.4.40

सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः। रामश्शेते। रामश्चिनोति सच्चित्। शार्ङ्ग्जयः।

व्याख्याः सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के साथ योग हो तो सकार को शकार और तवर्ग का चवर्ग आदेश हो जाता है। यथासख्यमनुदेशः समानाम् सूत्र से त् को च्, थ को छ्, द को ज्, ध् को झ् तथा न् को ञ् आदेश होता है। जैसे– रामस्+शेते = रामश्शेते। रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति। सत् + चित् = सच्चित्। शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः। ध्यान रहे, सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के साथ योग कहा गया है। पूर्व और पर का विचार यहाँ नहीं किया जाता है।

शात् 8.4.44

शात् परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात्। विश्नः प्रश्नः।

व्याख्याः शकार से परे तवर्ग के स्थान में श्चुत्व नहीं होता है। जैसे विश्+नः। यहाँ शकार और तवर्ग न् का योग है, इसलिए स्तोः श्चुना श्चुः से न् को ञ् प्राप्त था। परन्तु शात् सूत्र से उसका बाध हो गया। इसलिए विश्नः रूप ही रहा। इसी प्रकार प्रश् + नः = प्रश्नः।

ष्टुना ष्टुः 8.4.41

स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्याद्। रामष्षष्ठः। रामष्टीकते। पेष्टा। तट्टीका। चक्रिण्ढौकसे।

व्याख्याः सकार और तवर्ग का यदि षकार और टवर्ग के साथ योग हो तो सकार को षकार और तवर्ग को टवर्ग आदेश हो जाता है। जैसे रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः (छठा राम) रामस् + टीकते = रामष्टीकते (राम जाता है)। पेष् + ता = पेष्टा (पीसने वाला)। तत् + टीका = तट्टीका (उसकी टीका)। चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौसे से (हे चक्रधारी तुम जाते हो)। इन उदाहरणों में षकार अथवा टवर्ग के योग में सकार को षकार अथवा टवर्ग के योग में सकार को षकार और तवर्ग को टवर्ग आदेश हुआ है। यथासंख्यमनुदेशः समानाम् से त् को ट्, थ् को ठ्, द् को ड्, ध को ढ् तथा न् को ण् आदेश होता है। सकार और तवर्ग का षकार और टवर्ग से योग होना कहा गया है चाहे वह पूर्व हो या पर हो।

न पदान्ताट्टोरनाम् 8.4.42

पदान्ताट्टवर्गात्परस्यानामः स्तो ष्टुर्न स्यात्। षट् सन्तः। षट् ते। पदान्तात् किम् –ईट्टे। टोः किम् संर्पिष्टमम्।

व्याख्याः पदान्त टवर्ग से परे सकार और तवर्ग को टवर्ग आदेश नहीं होता है। यह ष्टुना ष्टुः सूत्र का अपवाद है जैसे षट् सन्तः (छह सन्त)। यहाँ षट् में ट् पद के अन्त में है। इसलिए स को ष् आदेश नहीं हुआ है। इसी प्रकार षट् ते (वे छह) में पदान्त ट् से परे त् को ट् आदेश नहीं हुआ है। यदि टवर्ग पदान्त में न हो तो सकार और त वर्ग को षकार और टवर्ग ओदश हो जाता है। जैसे ईट्+ते (यहाँ ईड् धातु के ड् को त परे होने पर खरि च सूत्र से ट् आदेश हुआ है। ते प्रत्यय आत्मने पद का लट् लकार प्रथम पुरूष एकवचन का प्रत्यय है। यहाँ ट् पदान्त नहीं है, अपितु पद के मध्य में है, इसलिए त् को ट् आदेश हो जाएगा और रूप बनेगा ईट्टे। सूत्र में पदान्त ट वर्ग कहा गया है। बनाम परे होने पर इस सूत्र की प्रवत्ति नहीं होती। जैसे षड्+नाम = षण्णाम्। यहाँ प्रत्यये भाषायां नित्यम् इस वार्तिक से ड् को ण् आदेश हुआ और स्थिति हुई षण् + नाम। यद्यपि ण् पदान्त टवर्ग है तो भी नाम के न को ण् प्राप्त हो जाता है क्योंकि सूत्र की प्रवति नाम शब्द को छोड़कर बताई गई है। अतः रूप बना षण्णाम्।

वा. अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्। षण्णाम्। षण्णवतिः। षण्णगर्यः।

व्याख्याः नाम, नवति और नगरी को छोड़कर पदान्त टवर्ग से पर त वर्ग को ट वर्ग आदेश नहीं होता है। ऐसा कहना चाहिए। न पदान्ताट्टो...... सूत्र में नाम पद को छोड़कर कहा गया है। वर्तिककार ने नवति और नगरी शब्द को नाम के साथ सम्मिलित किया है। जैसे षण्+नवतिः = षण्णवतिः। षण् + नगर्यः = षण्णगर्यः। यहाँ षड् के ड् को यरोनुनासिके नुनासिको वा से विकल्प से ण् हुआ है। ण् से परे नवतिः और नगरी के न को टवर्ग ण् आदेश हुआ है। ड् को ण् जब नहीं होगा तो रूप बनेगा षड्णवतिः, षड्णगर्यः।

तो षिः 8.4.43

न ष्टुत्वम्। सन् षष्ठः।

व्याख्याः षकार परे रहते तवर्ग को टवर्ग आदेश नहीं होता है। यह ष्टुना ष्टुः का अपवाद है। जैसे सन् + षष्ठः = सन् षष्ठः ष्टुना ष्टुः से न् को ण् प्राप्त था परन्तु प्रकृत सूत्र से उसका निषेध हो गया।

झलां जशोन्ते 8.2.39

पदान्ते झलां जशः स्युः। वागीशः।

व्याख्याः पद के अन्त में झलों को जश् आदेश हो जाता है। झल् प्रत्याहार में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, ततीय, चतुर्थ वर्ण तथा श ष स ह वर्ण आते हैं। जश् में केवल ततीय अर्थात् ज, ब, ग, ड, द वर्ण आते हैं। किस झल् के स्थान पर क्या आदेश हो इसका निर्णय इस बात से होता है कि झल् कौन से वर्ग का है। जिस वर्ग का झल् उसके स्थान पर उसी वर्ग का ततीय वर्ण हो जाता है जैसे क, ख, ध के स्थान पर गः च, छ झ ज् होगा ष् के स्थान पर स्थाने अन्तरतमः से डकार, श् को जकार तथा स् को तकार होना चाहिए। परन्तु श् और स् के उदाहरण नहीं मिलते हैं।

उदाहरणः वाक् + ईशः । यहाँ वाक् में क् पदान्त में है इसलिए इसको जशत्व होकर ग् बना और वागीश रूप सिद्ध हुआ।

यरोनुनासिकेनुनासिको वा 8.4.45

यरः पदान्तस्यानुनासिके परे अनुनासिको वा स्यात्। एतन्मुरारिः, एतद्मुरारिः।

व्याख्याः पदान्त यर् से परे यदि अनुनासिक हो तो यर् को विकल्प से अनुनासिक हो जाता है। जैसे एतद् + मुरारिः = एतन्मुरारिः। यहाँ द् यर् प्रत्याहार का वर्ण है और पदान्त में है। उससे परे अनुनासिक म् है। इसलिए द् को स्थानेन्तरतमः से उसी वर्ण का अनुनासिक न् आदेश हुआ है। विकल्प पक्ष में एतद्मुरारिः रूप बनेगा।

वा. प्रत्यये भाषायां नित्यम्। तन्मात्रम्, चिन्मयम्

व्याख्याः यदि अनुनासिक प्रत्यय के आदि में हो तो लैकिक भाषा में यर् को नित्य अनुनासिक जैसे तद् + मात्रम्। यहाँ मात्र प्रत्यय परे होने पर द् को नित्य न् होगा और रूप बनेगा तन्मात्रम्। मात्रच् प्रत्यय 'तदस्य परिमाणम्' अर्थ में 'द्वयसुच्दध्नच्मात्रचः' सूत्र से हुआ है। इसी प्रकार चित्+मयम्। यहाँ म् मयट् प्रत्यय का है। अतः त् को नित्य अनुनासिक होकर चिन्मयम् रूप बनेगा। यहाँ 'तत्प्रकृतवचने मयट्' से मयट् प्रत्यय हुआ है।

तोर्लि 8.4.60

तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णः। तल्लयः। विद्वाँल्लिखति। नस्यानुनासिको लः।

व्याख्याः लकार परे होने पर तवर्ग को परसवर्ण हो जाता है। जैसे तद्+लयः = तल्लयः। यहाँ द् को लकार परे होने पर परसवर्ण ल् आदेश हुआ है। नकार को अनुनासिक ल् आदेश होता है। जैसे विद्वान् + लिखति = विद्वाल्ँलिखति = विद्वाल्लिँखति।

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य 8.4.61

उदः परयोः स्थास्तम्भोः पूर्वसवर्णः।

व्याख्याः उद् उपसर्ग से परे यदि स्था और स्तम्भ धातु हों तो स्था और स्तम्भ धातुओं के स्थान पर पूर्वसवर्ण आदेश हो जाता है।

तस्मादित्युत्तरस्य 1.1.67

पचमनिर्देशेन क्रियमाणं कार्य वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम्।

व्याख्याः तस्मात् पद पचमी विभक्ति का सूचक है। जब पचमी विभाकि द्वारा कोई कार्य निर्दिष्ट हो तो वह कार्य पचम्यन्त पद द्वारा बोधित शब्द से बाद वाले वर्ण पर होता है। पचमी–निर्दिष्ट पद और जिस वर्ण पर कार्य हो उसके बीच में किसी अन्य वर्ण का व्यवधान नहीं होना चाहिए। जैसे 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य' सूत्र में उदः में पचमी विभक्ति है। अतः उत् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ पर कार्य होंगे।

उत् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण आदेश बाताया गया है। यह आदेश किस वर्ण के स्थान पर हो इसका निर्णय अग्रिम सूत्र से होगा।

आदेः परस्य 1.1.54

परस्य यद् विहितं तत् तस्योदेर्बोध्यम्। इति सस्य थः।

व्याख्याः जो कार्य बाद वाले शब्द पर बताया गया है वह कार्य उस शब्द के आदि वर्ण पर होता है। जैसे उद्+स्थानम् और उद्+स्तम्भनम्। यहाँ स्थानम् स्था धातु का रूप है और स्तम्भनम् धातु का रूप है। अतः पूर्वसवर्ण आदि वर्ण स् के स्थान पर होगा। पूर्ववर्ण तवर्ग है अतः से के स्थान तवर्ग होगा। स् का सवर्ण तवर्ग को कौन सा वर्ण है स्थानेन्तरतमः से प्रयत्न सादश्य के कारण स् का सवर्ण थ् होगा क्योंकि दोनों का प्रयन्त विवार, श्वास, अघोष और महाप्राण है।

इसलिए उद्+थ्थानम्, उद्+थ्तम्भनम् यह स्थिति हुई।

झरो झरि सवर्णे 8.4.65

हलः परस्य झरो वा लोपः सवर्णे झरि।

व्याख्याः हल् से परे झर् हो और उससे परे सवर्ण झर् हो तो पूर्व झर् का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे उद्+थ्थानम् और उद्थ्तम्भनम् में थ् से परे सवर्ण झर् हैं। इसलिए पूर्व थ् का लोप हो गया और स्थिति हुई उद्+थानम् और उद्+तम्भनम्।

खरि च 8.4.55

खरि झलां चरः स्युः। इत्युदो दस्य तः उत्थानम्, उत्तम्भनम्।

व्याख्याः खर् परे होने पर झलों को चर् आदेश हो जाता है। उद्+थानम् और उद्+तम्भनम् में द् से परे खर् है। इसलिए द् को चर् आदेश होगा। चर् में वर्ण हैं च ट त क प श ष स। स्थानेन्तरतमः से द् को त् आदेश होगा। इसलिए रूप बनेगा उत्थानम् तथा उत्तम्भनम्। जब थ का लोप नहीं होगा तो स्थिति होगी उद् + थ् थानम्, उद् + थ्तभ्मनम्। यहाँ खरि च सूत्र से थ् और द् दोनों को चर् आदेश त् होगा। इसलिए रूप बनेंगे उत्त्थानम् और उत्त्तम्भनम्।

झयो होन्यतरस्याम् 8.4.62

झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः। नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य हसय तादशो वर्गचतुर्थाः-वाग्धरिः, वा ग्हरिः।

व्याख्याः झय् से परे हकार को विकल्प से पूर्वसवर्ण आदेश हो जाता है। जैसे वाग् + हरिः। यहाँ ग् झय् प्रत्याहार का वर्ण है और उससे परे ह् है इसलिए ह् को विकल्प से पूर्व सवर्ण होगा। ग् कवर्ग का वर्ण है इसलिए स्थानेन्तरतमः से

ह् को कवर्ग का घ् होगा। क्योंकि ह् और घ् का प्रयत्न नाद, घोष, संवार और महाप्राण है। इसलिए रूप बना वाग्धरिः। विकल्प पक्ष में वाग्हरिः ही रहेगा।

शश्छोटि 8.4.63

झयः परस्य शस्य छो वाटि।

व्याख्याः झय् से परे शकार हो और उससे परे अट् हो तो शकार को विकल्प से छकार आदेश हो जाता है। जैसे तद् + शिवः। यहाँ द् को स्तोः श्चुनाश्चुः से च वर्ग ज् आदेश हुआ और ज् को खरि च सूत्र से च्। च् झय् प्रत्याहार का वर्ण है। उससे परे शकार है और शकार से रे इ अट् है। इसलिए प्रकृत सूत्र से श् को छ् आदेश हुआ और रूप बना तच्छिवः। छकार के अभाव पक्ष में तच्शिवः रूप ही बनेगा।

मोनुस्वारः 8.3.23

मान्तस्य पदस्यनुस्वारो हलि। हरिं वन्दे

व्याख्याः जो पद मकारान्त है उसको हल् पर होने पर अनुस्वार आदेश हो। अलोान्त्यस्य परिभाषा के अनुसार म् को अनुस्वार होगा न कि सम्पूर्ण पद को। जैसे हरिम् + वन्दे। यहाँ म् हरिम् पद के अन्त में है इसलिए इसे अनुस्वार आदेश हुआ और रूप बना हरिं वन्दे।

नश्चापदान्तस्य झलि 8.3.25

नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः। यशांसि, आक्रंस्यते। झलि किम् मन्यसे।

व्याख्याः अपदान्त नकार और मकार को अनुस्वार आदेश हो जाता है जब उससे परे झल् हो। पूर्व सूत्र में पदान्त म् को अनुस्वार आदेश बताया गया है। जैसे यशान् + सि = यशांसि। यहाँ न् पद के मध्य में है और परे सकार झल् हैं, इसलिए अनुस्वार आदेश हुआ है। इसी प्रकार आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते (आक्रमण किया जाएगा)। इसी प्रकार संगंस्यसि, पयांसि, मंस्यते, गंस्यते आदि रूप बनेंगे। । यह स्थिति झल् पर होने पर ही होती है। मन्यते में अनुस्वार नहीं होगा क्योंकि न् से परे यकार है जो झल् नहीं है।

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः 8.4.58

स्पष्टम्। शान्तः।

व्याख्याः यय् परे होने पर अनुस्वार को पर सवर्ण आदेश हो जाता है। जैसे शान्तः। यहाँ शाम्+तः में म् को पहले नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से अनुस्वार आदेश हुआ और स्थिति हुई शां + तः। अनुस्वार से परे त् है जो यय् प्रत्याहार का वर्ण है। इसलिए प्रकृत सूत्र से अनुस्वार को पर सवर्ण ओदश प्राप्त हुआ। अर्थात् तवर्ग आदेश हुआ। स्थानेन्तरतमः से न् आदेश प्राप्त हुआ। इसलिए रूप बना शान्तः। इसी प्रकार अ॒त, लुचित, लुण्ठित, गुम्फित आदि शब्दों में पर सवर्ण हुआ है।

वा पदान्तस्य 8.4.59

त्वVरोषि, त्वं करोषि।

व्याख्याः पद के अन्त में अनुस्वार को यय् परे होने पर विकल्प से पर सवर्ण आदेश होता है। जैसे त्वम् + करोषि। यहाँ मोनुस्वारः से म् को अनुस्वार हुआ और स्थिति हुई त्वं + करोषि। अनुस्वार पद के अन्त में है इसलिए विकल्प से परसवर्ण हुआ। इसलिए रूप बना त्वVरोषि। विकल्प पक्ष में अनुस्वार ही रहेगा और स्थिति होगी त्वं करोषि।

फलितार्थ यह है कि यदि अनुस्वार पद के मध्य हो तो उसे यय् परे होने पर नित्य परसवर्ण आदेश होगा और पद के अन्त में विकल्प से।

मो राजि समः क्वौ 8.3.25

क्विबन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात्। सम्राट्।

व्याख्याः क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु परे होने पर सम् के म् को म् ही रहता है। जैसे सम्राट्। सम्+राज्+क्विप्। क्विप् का सर्वापहारी लोप होता है। सम+राज्। राज् के ज् को व्रश्चभ्रस्जसजमज यजराजभ्राजच्छषां षः सूत्र से ष् हुआ को झलां जशोन्ते सूत्र से ड् हुआ और वावसाने से चर्त्व होकर ट् बना। इस प्रकार स्थिति बनी सम्+राट्। वर्तमान सूत्र से म् को अनुस्वार न होकर म् ही रहा और रूप बना सम्राट्।

हे मपरे वा 8.3.26

मपरे हकारे परे मस्य मो वा। किम्ह्मलयति, किं ह्मलयति।

व्याख्याः म् से परे ह् हो और ह् से परे म् हो तो ह् से पूर्व म् को विकल्प से म् ही रहता है। जैसे किम् + ह्मलयति। यहाँ म् से परे मकार परक ह् है। अतः वर्तमान सूत्र से मकार को विकल्प से म् ही रहेगा। किम्ह्मलयति (क्या गति करता है)। विकल्प पक्ष में किं ह्मलयति रूप बनेगा।

वा. यवलपरे यवला वा कियँ ह्यः।, किं ह्यः। किवँह्वलयति, किं ह्वलयति। किलँह्लादयति, किं ह्लादयति।

व्याख्याः म् से परे ह् हो हो और उससे परे य्, व्, ल् हों तो म् को विकल्प से क्रम से मकार, वकार और लकार हो जाते हैं। जैसे–

किम् + ह्यः = कियँह्यः। म् अनुनासिक है, अतः य्, व्, ल् भी अनुनासिक ही होंगे। इसी प्रकार किम् + ह्वलयति = किवँ ह्वलयति। किम् + ह्लादयति = किलँ ह्लादयति। विकल्प पक्ष में म् को अनुस्वार होगा जैसे– किं ह्यः। किं ह्वलयति। किं हलादयति।

नपरे नः 8.3.27

नपरे हकारे मस्य नो वा। किन्हनुते नुते, किं ह्नुते।

व्याख्याः नकार परक हकार परे होने पर म् को विकल्प से न् आदेश होता है। जैसे किम् + ह्नुते = किन्ह्नुते। विकल्प पक्ष में म् को अनुस्वार होगा और रूप बनेगा किं ह्नुते।

आद्यन्तौ ट्कितौ 1.1.46

टित्कितौ यस्योक्तौ, तस्य, क्रमादाद्यन्तावयवौ स्तः।

व्याख्याः जिस शब्द को टित् आगम बताया गया हो वह आगम उस शब्द के आदि में होता है और कित् आगम उस शब्द के अन्त में होता है। उदाहरण के लिए आगे देखें।

ङणोः कुक् टुक् शरि 8.3.28

वा स्तः

व्याख्याः ङकार और णकार से परे यदि शर् हो तो ङकार को कुक् का और णकार को टुक् का आगम होता है। कुक् और टुक् के अन्तिम क् की हलन्त्यम् से इत् संज्ञा होती और उकार की उपदेशेजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा होती है। केवल क् और ट् शेष बचते हैं। क् और ट् कित् हैं अतः ये आगम शब्द के अन्त में होंगे। जैसे प्राङ् + षष्ठः। यहाँ ङ् से परे ष् है जो शर् है अतः प्राङ् को विकल्प से कुक् आगम प्राप्त हुआ और स्थिति हुई प्राङ् क् + षष्ठः।

वा. द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् प्राङ्ख्षष्ठः, प्राङ्क्षष्ठः, प्राङ्षष्ठः। सुगणठ् षष्ठः, सुगणट् षष्ठः, सुगण्षष्ठः।

व्याख्याः पौष्करसादि आचार्य के मत में चय् (अर्थात् वर्ग के प्रथम वर्ण) को द्वितीय वर्ण आदेश हो जाता है शर् परे होने पर जैसे प्राङ्क् + षष्ठः = प्राङ्ख्षष्ठः। यह मत पौष्करसादि का है, पाणिनि का नहीं। पाणिनि के मत में क् ही रहेगा और रूप बनेगा– प्राङ् क् + षष्ठः = प्राङ्क्षष्ठः (क् और ष् का संयोग क्ष् लिखा जाता है)। कुक् का आगम विकल्प

से है, अतः तीसरा रूप प्राङ्षष्ठः ही रहेगा। इसी प्रकार सुगण् = षष्ठः = सुगण्ट् + षष्ठः = सुगण् ठ् + षष्ठः = सुगण्ठ्षष्ठः और पाणिनि के मत में गुगण्ट्षष्ठः। टुक् आगम न होने पर सुगण् षष्ठः रूप रहेगा।

डः सि घुट् 8.3.29

डात्परस्य सस्य धुड् वा। षट्त्सन्तः षट् सन्तः।

व्याख्याः ड् से परे स् को धुट् का आगम विकल्प से होता है। जैसे षड् + सन्तः। यहाँ ड् से परे स् है, अतः स् को वर्तमान सूत्र से धुट् का आगम हुआ। धुट् का उट् इत्संज्ञक है, अतः ध् शेष रहा। ध् टित् है, अतः आ्द्यन्तौ ट्कितौ से स् के आदि में होगा। इस प्रकार स्थिति होगी षड् ध् सन्तः। ध् को खरि च से चर्त्व होकर स्थिति बनी षड् त् सन्तः। ड को भी खरि च से चर्त्व होकर ट् आदेश हुआ और रूप बना षट्त् सन्तः। घुट् का आगम न होने पर को चर्त्व होकर रूप बनेगा– षट्सन्तः।

नश्च 8.3.30

नान्तात् परस्य सस्य धुड्वा। सन् त् सः। सन् सः।

व्याख्याः नकारान्त पदसे परे परे यदि स् हो तो स् को धुट् का आगम विकला से होता है। पूर्व सूत्र में डकारान्त पद से परे स् को धुट् का आगम बताया था। यहाँ पथक् सूत्र अगले सूत्र में नकार की अनुवत्ति के लिए बताया गया है। उदाहरण– सन् + सः = सन्त्सः। विकल्पक्ष में सन् सः।

शि तुक् 8.3.31

पदान्तस्य नस्य शे परे तुग् वा। सा्छभ्भुः, सा्च्छभ्भुः, सा्च्शभ्भुः, सा् शम्भुः।

व्याख्याः पदान्त नकार से श् परे होने पर नकार को विकल्प से तुक् का आगम होता है। तुक का क् शेष रहता है। कित् होने के कारण यह आगम अन्त में होगा। जैसे न+शभ्भु = सन् त् शभ्भुः। स्तो श्चुना श्चुः से त् को च् आदेश हुआ और स्थिति इुई सन्च् शम्भुः। न् को भी श्चुत्व हो कर ा् हुआ। अतः रूप हुआ सा्च् शम्भुः। श को शश्छोटि से विकल्प से छ् आदेश हुआ और रूप बना सा्च्छम्भुः। तुक् का आगम न होने पर रूप बनेंगे–

सा् छम्भुः और सा्शम्भुः।

ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् 8.3.32

ह्रस्वात्परो यो ङम्, तदन्तं यत्पदं, तस्मात् परस्याचो ङमुट्। प्रत्यङ्ङात्मा सुगण्णीशः। सन्नच्युतः।

व्याख्याः ह्रस्व से परे ङम् हो, उस ङमन्त पद से परे अच् को ङमुट् आगम हो जाता है। ङम् प्रत्याहार में ङ, ण् और न् ये अनुनासिक वर्ण होते हैं। ये यदि पद के अन्त में हों और इन से पूर्व ह्रस्व अच् हो तो इनसे परे अच् को ङमुट् आगम होता है। ङमुट् का उट् इत्संज्ञक है। ङम् शेष रहता है। ङमुट् प्रत्याहार है जिसमें ङ्, ण् और न वर्ण होते हें। यथासंख्यमानुदेशः समानाम् के अनुसार ङ्, से परे ङ्, ण् से परे ण् और न से परे न् आगम होता है। ङमुट टित् है अतः यह आगम बाद वाले अच् के आदि में होगा। जैसे प्रत्यङ् + आत्मा। यहाँ प्रत्यङ् पद के अन्त में ङ् है और उससे पूर्व ह्रस्व अच् है, अतः बाद वाले अच् को ङ् आगम होगा। इस प्रकार रूप होगा– प्रत्यङ् + ङ् आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा। इसी प्रकार सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः। सन् + अच्युतः = सन्नच्युतः।

यह आगम नित्य बताया गया है परन्तु कई बार नहीं भी होता है। पाणिनि ने स्वयं कई स्थानों पर इस नियम का पालन नहीं किया है जैसे तिङन्त, सनादि आदि पदों में।

समः सुटि 8.3.5

समे रुः सुटि।

व्याख्याः सम् के म् को रु आदेश हो, सुट् परे होने पर। रु के उकार की इत्संज्ञा होती है केवल र् शेष रहता है। सुट् आगम है जिसके उट् की इत्संज्ञा होती है।

अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा 8.3.2

अत्र रुप्रकरणे रोः पूर्वस्यानुनासिको वा।

व्याख्याः इस रु के प्रकरण में रु से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है। पाणिनि ने रु आदेश दो स्थानों पर बताया है– एक तो ससजुषो रुः (8-2-66) सूत्र में और दूसरा मतुवसो रुः सम्बुद्धौ (8-3-1) से लेकर कानाम्रेडिते (8-3-92) सूत्र तक। सूत्र में प्रयुक्त अत्र से तात्पर्य वाद वाले रु से है। जैसे सम् + कर्त्ता। यहाँ सम्परिभ्याँ करोतौ भूषणे सूत्र से सुट् का आगम हुआ और स्थिति हुई स्म् + स्कर्त्ता। अब समः सुटि से रु आदेश हुआ। तब स्थिति हुई– सर् + स्कर्त्ता। तब र् से पूर्व वाले वर्ण अर्थात् स् को अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा सूत्र से अनुनासिक हुआ। तब स्थिति हुई– सँ र् स्कर्त्ता। अनुनासिक विकल्प से होता है। अनुनासिक के अभाव पक्ष में अगले सूत्र से अनुस्वार होगा।

अनुनासिकात्परोनुस्वारः 8.3.4

अनुनासिकं विहाय रोः पूर्वस्मात्परोनुस्वारागमः

व्याख्याः जब अनुनासिक न हो तो रु से पूर्व वाले वर्ण को अनुस्वारागम होता है। अनुस्वार होने पर स्थिति होगी सं र् स्कर्त्ता।

खवरवसानयोर्विसर्जनीयः 8.3.55

खरि अवसाने च पदान्तस्य रेफस्य विसर्गः।

व्याख्याः रवर् परे होने पर और अवसान में पदान्त रेफ को विसर्ग आदेश हो। अवसान की परिभाषा है– विराभोवसानम्। अर्थात् वर्णों के अभाव को अवसान कहते हैं। तब स्थिति हुई–

सँः स्कर्त्ता तथा संः स्कर्त्ता।

वा. संपुंकानां सो वक्तव्यः। सँस्कर्त्ता, संस्कर्त्ता।

व्याख्याः सम्, पुम् और कान् शब्दों के विसर्ग को स् कहना चाहिए। इस वार्तिक के अनुसार सम् के विसर्ग को स् होने पर रूप बनेंगे– सँस्कर्त्ता तथा संस्कर्त्ता।

पुमः खरवय्यम्परे 8.3.6

अम्परे खयि पुखो रुः। पुँस्कोकिलः पुंस्कोकिलः।

व्याख्याः पुम् से परे यदि खय् हो और उससे परे अम् हो तो पुम् के म् को रु आदेश हो। जैसे पुम् + कोकिलः = पुर् कोकिलः। यहाँ पुम् से परे क् है जो खय् प्रत्याहार का वर्ण है और उससे परे ओ है जो अम् प्रत्याहार का वर्ण है। अतः यहाँ प्रम् के म् को रु आदेश हुआ है।

अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तुवा सूत्र से रु से पूर्व वर्ण को अनुनासिक और दूसरे पक्ष में अनुनासिकात्परोनुस्वार सूत्र से अनुस्वार होकर स्थिति हुई– पुँर् कोकिलः तथ पुंर् कोकिलः। र् को खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्ग और समपुंकाना सो वक्तव्यः इस वार्तिक से स् आदेश होकर रूप बने–

पुँस्कोकिलः तथा पुंस्कोकिलः।

नश्छव्यप्रशान् 8.3.7

अम्परे छवि नान्तस्य पदस्य रुः

व्याख्याः नकारान्त पद से अम्परक छव् परे हो तो नकारान्त पद के न् को रु आदेश होता है, प्रशान् शब्द को छोड़कर। जैसे चक्रिन् + त्रायस्व। यहाँ नकारान्त पद से परे त् है जो छव् प्रत्याहार का वर्ण है और उससे परे र् है जो अम् प्रत्याहार का वर्ण है। अतः वर्तमान सूत्र से न् को रु आदेश हुआ। रु का र् शेष रहा और स्थिति हुई चक्रि र् + त्रायस्व। अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा तथा अनुनासिकात्परोनुस्वारः सूत्रों से पूर्ववर्ण को अनुनासिक तथा विकल्प से अनुस्वार होकर स्थिति हुई– चक्रिँ र्त्रायस्व तथा चक्रिंर्त्रायस्व। र् को खरवसानयोर्विसर्जनीय सूत्र से विसर्ग हुआ। तब स्थिति हई चक्रिँः त्रायस्व तथा चक्रिंः त्रायस्व।

विसर्जनीयस्य सः 8.3.34

खरि। चक्रिंस्त्रायस्व। अप्रशान् किम् प्रशान्तनोति। पदान्तस्येति किम् - हन्ति।

व्याख्याः खर् परे होने पर विसर्ग के स्थान पर स् आदेश हो जाता है। इस प्रकार रूप बने चक्रिँस्त्रायस्व तथा चक्रिंस्त्रायस्व। प्रशान् शब्द को रु आदेश नहीं होता, अतः रूप बनेगा– प्रशान्तनोति। यदि न् पदान्त न हो तो भी न् को रु आदेश नहीं होगा। जैसे हन् + ति = हन्ति। यहाँ न् पदान्त नहीं है।

नॄन् पे 8.3.10

नॄन् इत्यस्य रुर्वा पे।

व्याख्याः नॄन् पद के न् को विकल्प से रु आदेश होता है जब पकार परे हो। जैसे नॄन् + पाहि = नॄर् पाहि। पूर्ववत् नॄ को अनुनासिक और अनुस्वार आगम होकर तथा र् को विसर्ग होगर स्थिति हुई–

नॄँः पाहि तथा नॄंः पाहि। अब विसर्ग को विसर्जनीयस्य सः से स् प्राप्त होता है।

कुप्वोः ˘ क ˘ पौ च 8.3.37

कवर्गे पवर्गे च विसर्गस्य ˘ क ˘ पौ स्तः। चाद्विसर्गः। नॄँ ˘ पाहि, नॄं ˘ पाहि, नॄँः पाहि, नॄंः पाहि।

व्याख्याः कवर्ग और पवर्ग परे होने पर विसर्गों को क्रमशः जिह्वामूलीय और उपध्मानीय हो जाते हैं तथा विकल्प से विसर्ग भी रहते हैं। अतः नॄं ˘ पाहि, नॄं ˘ पाहि, नॄँ : पाहि, नॄं : पाहि ये चार रूप बनेंगे। जिह्वामूलीय और उपध्मानीय के लिए समान चिह्न ˘ लगते हैं। इस चिह्न के आगे कवर्ग हो तो जिह्वामूलीय और पवर्ग हो उपध्मानीय पढ़े जाएंगे।

तस्य परमाम्रेडितम् 8.1.2

द्विरुक्तस्य परमाम्रेडितं स्यात्।

व्याख्याः जब किसी शब्द को दो बार कहा जाए तो बाद वाले शब्द के आम्रेडितसंज्ञा होती है। जैसे कान् कान्। यहाँ बाद वाले कान् की आम्रेडित संज्ञा है।

कानाम्रेडिते 8.3.12

कान्नकारस्य रुः स्यादाम्रेडिते। कॉँस्कान् कांस्कान्।

व्याख्याः कान् शब्द के नकार को रु आदेश होता है आम्रेडिते परे होने पर। जैसे कान् कान्। यहाँ पूर्व कान् के न् को रु आदेश होगा क्योंकि द्वितीय कान् की आम्रेति संज्ञा है। इसलिए स्थिति हुई– कार् कान्। पूर्ववत अनुनासिक्, अनुस्वार, विसर्जनीय और सकार होकर रूप बनेंगे – कॉँस्कान् तथा कांस्कान्। यहाँ विसर्जनीयस्य सः सूत्र से विसर्ग को स् स् प्राप्त हुआ परन्तु वा शरि सूत्र से विकल्प से विसर्ग भी प्राप्त होता है जिसको बाध कर 'सम्पुंकानां सो वक्तव्यः' वार्तिक से सकार ही होगा।

छे च 8.1.73

ह्रस्वस्य छे तुक्। शिवच्छाया।

व्याख्याः छकार परे होने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है। जैसे शिव + छाया = शिव + त् + छाया। त् को स्तोः श्चुना श्चुः से चवर्ग च् होकर रूप बना शिवच्छाया।

पदान्ताद्वा 6.1.56

दीर्घात्पदान्ताच्छे तुग्वा। लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

व्याख्याः छकार परे होने पर पदान्त दीर्घ को विकल्प से तुक् का आगम होता है। जैसे लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया तथा लक्ष्मीछाया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या कीजिए–

   स्तोः श्चुनाश्चुः, ष्टुना ष्टुः, झलां जशोन्ते, यरोनुनासिकेनुनासिको वा, तोर्लि, झरो झरि सवर्णे, खरिच, शश्छोटि, नश्चापदान्तस्य झलि, मोनुस्वारः अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः आद्यन्तौ ट्कितौ, डः सि धुट्, खर वसानयोर्विसर्जनीयः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सूत्रनिर्देशपूर्वक सन्धि कार्य दिखाइए–

   रामश्चिनोति, प्रश्नः, षट्सन्तः, वागीशः, एतन्मुरारिः, उत्थानम्, वाग्धरिः तच्छिवः, सम्राट्, प्रत्यङ्ङात्मा, सँस्स्कर्ता, पुँस्कोकिलः, चक्रिंस्त्रायस्व, शिवच्छाया।